International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गोदान उपन्यास में चित्रित समस्याए एंव आधुनिक समाज

किशन लाल रेगर (जेतपुरा राजसमन्द)

सारांश : गोदान उपन्यास प्रसिद्ध उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा सन 1936 में लिखा गया है ! इस उपन्यास की गणना भारतीय साहित्य के सबसे महान हिंदी उपन्यासों में की जाती है! गोदान यथार्थवादी उपन्यास परम्परा की सबसे महत्वपूर्ण कृति है गोदान उपन्यास स्वतंत्रा पूर्व भारत में गरीब किसानो की झलक पेश करता है तथा हमें यह बताता है! कि प्रतिकूल परिस्थितियो में लोग आशा और विश्वास के साथ कैसे जीवित रह सकते है उपन्यास गरीबी एक प्रमुख विषय है! अमीरों द्वारा गरीबो का शोषण किया जाता है होरी और उसका परिवार गरीब है वह अपनी जरूरतों को पुरा करने के लिए हर समय संघर्षरत है उनका अमीरों द्वारा शोषण किया जाता है और साहुकारो से उच्य ब्याज दरो पर ऋण लेने के लिए मजबूर किया जाता है गोदान उपन्यास में छुआ छूत व उच –नीच की भावनाओ को उजागर किया गया है !

.....

गोदान उपन्यास का पात्र होरी एक गरीब परिवार का मुखिया होता है! तथा इसके परिवार के सभी सदस्य इस गरीबी के शिकार होते है होरी को गाय पलने का बड़ा शोक होता है तथा वह रुपया नहीं होने पर भी भोला से 80 रूपये में गाय खरीद कर लता है होरी नहीं चाहते हुए भी बेटी रूपा की शादी रामसेवक महतो से कर देता है! जो एक अनमेल विवाह होता है क्योकि गरीबी के कारण रूपा कि शादी के लिए होरी के पास रूपये नहीं थे विवाह की समस्या गोदान की एक मुख्य समस्या है दहेज़ प्रथा के कारण विवाह होने में बाधाये उत्पन होती है बाल विवाह अनमेल विवाह आदि के उदाहरण इसमें देखे जाते है होरी की बेटी सोना के विवाह में दहेज़ की मुख्य समस्याए उत्पन हुई थी कहती बेटी रूपा का विवाह भी दहेज़ ना दे सकने के कारण अधिक उम्र के रामसेवक महतो से करना पड़ता है इसी प्रकार गोदान के अलावा मुंशी प्रेमचंद ने निर्मला उपन्यास में अनमेल विवाह का वर्णन किया है जिसमे निर्मला नामक पात्र की उम्र 15 वर्ष तथा उसे पति तोताराम की उम् लगभग 40 वर्ष होती है लेकिन फिर भी उनके मध्य शादी कर दी जाती है इस प्रकार आजादी के पूर्व से लगाकर वर्तमान समय में भी समाज में आज भी यही स्थिति देखने को मिलती है समाज में आटा – साटा जैसी कुप्रथा भी देखने को मिलती है लड़की के बदले लड़की ली जाती है जिससे समाज में कई दुष्प्रभाव देखने को मिलते है

गोदान में अंग्रेजी राज का पोषण राज्यकर्मचारी के द्वारा होता है होरी के गाँव में पटेश्वरी सरकारी नौकर है वह एक बार धमकाते हुए कहता है मै जमीदार या महाजन का नौकर नहीं हूँ सर्कार बहादुर का नौकर हूँ जिसका दुनिया भर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

में राज और जो तुम्हरे महाजन व जमीदार दोनों का मालिक है आज भी ग्रामीण परिवेश में होरी की तरह कर किशन गरीब तथा शोषण के शिकार है तथा मंगरूशाह ,दाता दिन सुहूआइन की तरह पैर पसार कर गरीब किसानो का शोषण कर रहे है हमारे देश आज भी कई परिवारों को एक वक्त का खाना नहीं मिल पा रहा है ऐसी स्थति में गरीब किसान अपने पुत्र – पुत्री की शादी के लिए सूद पर रुपए लाते है यह कर्ज कई गुना ब्याज चुकाने पर भी नहीं चुकता है आधुनिक कल के प्रारम्भिक वर्षो में भारतेंदु हरिश्चंद ने भी अंग्रजो द्वारा गरीब भारतीय किसानो के ऊपर किये जा रहे है शोषण का वर्णन करते हुए लिखा है कि –

“भीतर –भीतर सब रस चुसे ,
हँसी –हँसी के तन –मन –धन मुसे
जाहिर बातन में अति तेज .
क्यों सखी सज्जन नहीं अंग्रेज !

गोदान उपन्यास में प्रेमचंद द्वारा भाइयो के आपसी सम्बन्ध व प्रेम को भी इंगित करते हुए दर्शाया है! की होरी होरी उसके भाइयो के मध्य आपसी सम्बन्ध आचे नहीं थे ! होरी के दो भाई थे हिरा व शोभा जब होरी भोला से रूपये 80 गाय क्जरिड लाता है तो , भाइयो से यह देखा नहीं जाता है और वो सोचते है कि बटवारे के समय सम्पति ली थी ! तथा इसी से यह गाय खरीद लाया है! गाय लाना छोटे भाई हिरा को पचता नहीं तो हिरा आग लेने के बहाने गाय के पास जाता है ! तथा गाय को जहर दे आता है जिससे थोड़े समय बाद गाय की मृत्यु हो जाती है होरी हिरा तथा शोभा के परिवार की तरह आज भी वर्तमान समाज में भाइयो के मध्य आपसी झगडे देखे जाते है ! छोटी-छोटी बातो पर झगडा होते रहे है ! जैसे जमीन बंटवारा ईर्ष्या की भावना आदि वर्तमान सामाजिक समाज में भी देखे जाते है ! तत्कालीन समाज में नारी का स्थान उतना ऊँचा न था ! नारी को सामान्य व्यक्तियों के अधिकार भी प्राप्त नहीं थे ! इस उपन्यास में स्त्री प्रताड़ना के अनेक प्रसंग देखे जाते है ! चौधरी तथा पुनिया के मध्य जब कहासुनी होती है और यह खबर जब हिरा तक पहंचती है तो हिरा पुनिया को लातो से मारता है! पुरुष वर्ग द्वारा स्त्री को वासना पूर्ण दृष्टि से देखा जाता है ! वर्त्तमान समाज मै भी यह प्रंसग अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है आज भी स्त्रियों को समानता की दृष्टि से नहीं देखा जाता है !जबकि सविधान में समानता की बात कही गई है ! भारतीय नारी के जीवन के विषय में मैथीलशरण गुप्त ने कहा है कि –

“अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी !
आँचल में है दूध और आँखों में पानी “!

गोदान उपन्यास में छुआ –छूत व उंच – नीच की भावना को उजागर किया गया है ! गोबर ने झुनिया से प्रेम किया

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

और होरी ने उनको अपने घर में शरण दे दी थी! इस पर गाँव में थू –थू होने लगी थी ! थानेदार ने आकर अपना रौब जमाया था ! इसके विपरीत पंडित दातादिन का बेटा माता दिन ने चमारिन सिलिया को विना ब्याह किये घर में रख लिया था ! पूरे गाँव में चुप्पी छा गई थी ! दुसरे के स्पर्श से अपवित्र हो जाने वाला माता दिन सिलिया के शरीर का भोग करते समय अपवित्र नहीं होता है ! इस प्रकार की विडम्बना भी समाज में देखि गई थी ! यह सिलिया को गर्भवती बनाकर रखता है ! इस प्रकार प्रेमचंद ने गोदान में अछूत समस्या का व्यापक रूप से विरोध किया है !

छुआ –छूत व समाज में व्याप्त उच्च –नीच की बहवाना का वर्णन प्रसिद्ध लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि ने भी अपनी प्रसिद्ध कहानी सलाम में किया है ! एक गाँव में जुम्मन चूहड़ा के यहाँ बारात आती है ! तथा गाँव में रांगड़ जाति के लोग अधिक मात्र में रहते थे उसे गाँव में यह नियम था ! कि नीची समझी जाने वाली जातियों के यहाँ जब बारात आती है तो ऊँची जातियों के घर दू ल्हें को सलाम के लिए जाना पड़ता था ! जुम्मन चूहड़े के यहाँ जब बारात की विदाई होती है उस समय दू ल्हें के द्वारा सलाम का विरोध किया है तथा वह अपने आप को अपमानित महसूस करता है ! इस प्रकार स्वतंत्रा के बाद भी भारत में इस प्रकार की शोषणकारी तथा मनुष्य समाज को एक दुसरे से अलग कने वाली समाज में प्रचलित कुप्रथा का अंत नहीं हुआ है !

गोदान उपन्यास में आडम्बर व धर्म का सहारा लेने वाले व्यक्तियों पर करारा व्यंग्य किया गया है ! दातादिन का बेटा मातादिन अपने से निम्न जाति की लड़की से सिलिया चमारी से प्रेम करता है लेकिन एक दिन जिस प्रकार से एक पक्षी के पर कतरकर उसे पिंजरे से बाहर निकाल दिया जाता है ! उसी प्रकार माता दिन के द्वारा सिलिया को घर से बाहर निकाल दिया जाता है तभी सिलिया के माँ –बाप, दोनों भाई तथा अन्य चमारो ने आकर माता दिन का विरोध किया था ! माता दिन के हाथ पकड़कर उसके मुंह में एक बड़ी हड्डी का टुकड़ा दल दिया था ! इससे सिलिया तरह माता दिन भी अछूत हो गया तथा उसका धर्म –भ्रष्ट हो गया ! माता दिन ने अपने को पुन: उच्च कुल का साबित करने के लिए काशी के पंडितो के पास किया था ! वंहा पर भारी हवन किया गया था ! कई लोगो को भोजन कराया गया था ! माता दिन को शुद्ध गोबर गोमूत्र खाना पीना पड़ा था ! गोबर खाने से उसका मान पवित्र हो गया था तथा मूत्र पीने से उसकी आत्मा के अशुचिता के सारे कीटाणु मर गए ! इस प्रकार प्रेमचंद ने गोदान उपन्यास के माध्यम से बाहाय आडम्बरो का वर्णन किया है ! जो वर्तमान समाज में भी देखने को मिलते है ! आज भी जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर मृत्यु भोज जैसे क्रियाकर्म किये जाते है जो एक आडम्बर की प्रवृति को उजागर करता है ! इसी प्रकार की आडम्बर प्रवृति का वर्णन मुंशी प्रेमचंद अपनी कहानी “सवा सेर गेहू “ में किया ! इसमें शंकर नाम का किसान होता है ! जो एक साहूकार से सेवा सेर गेहू उधार लाता है ! जब शंकर गेहू को पुन : नहीं लोटा नहीं पता है तो साहूकार द्वारा डराया जाता है !की अगर तुम सवा सेर गेहू नहीं लोटाओगे तो अगले जन्म में नरक में जाओगे ! इस

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रकार आडम्बर व दिखावा समाज में बहुत अधिक मात्र में व्याप्त है !

आडम्बरो के साथ –साथ समाज में व्याप्त दिखावे का वर्णन भी मुंशी प्रेमचंद ने राय साहब के माध्यम से व्यक्त किया आज भी समाज में " अधजल गगरी छलकत जाए " वाली कहावत चरितार्थ होती है ! राय साहब पर लाखो रूपये का ऋण है ! फिर भी दिखावे में किसी प्रकार की कमी नहीं रखते है ! ऐशो आराम की जिंदगी जीते है ! दिखावे के रूप में संपादक ओंकारनाथ को 75 रूपये रिश्वत के रूप में देते है अपने आप को किसान का हितेषी कहता है ! लेकिन उसकी कथनी व करनी में अंतर होता है ! राय साहब कहते है कि " मुझसे बढकर दूसरा उनका कोई हितेछू नहीं हो सकता है ! लेकिन मेरी गुजर कैसे हो , अफसर को दावते कहा से दू ? वह सरकारी चंदे कहा से दूँ " ! इसी प्रकार वर्तमान समाज में भी राय साहब की तरह दिखावा प्रवृति के लोग काफी मात्रा में मिलते है ! जिनके पास होता कुछ भी नहीं लेकिन दिखावा करोडो का करते है !

गोदान उपन्यास में नारी की समस्या , एक मुख्य समस्या है गाँव में लोग परम्परा प्रेमी होते है ! तथा प्राचीन जीवन मूल्यों में विश्वास रखते है तथा नारी के प्रति वही दृष्टिकोण रहा है जो पुरुष प्रधान समाज का रहा है ! चाहे नारी ग्रामीण क्षेत्र की हो या शहरी क्षेत्र की दोनों जगह एक ही स्थिति है @ ग्रामीण क्षेत्र में झुनिया,सिलिया,सोना,रूपा का वर्णन है ! वही शहरी क्षेत्र में मालती जैसी नारी का वर्णन है ! लोग नारी को अपना गुलाम समजते है तथा एक गाय की तरह मानते है ! जिसे किसी भी खूंटे से उसकी इच्छा के विरुद्ध बाँधा जा सकता है ! गाँव में होरी, धनिया उग्र स्वभाव की निर्भय स्त्री को भी दबा कर रखना चाहता है ! भोला अधेड़ होकर भी नव युवती से शादी कर उसको दासी की तरह रखना चाहता है ! सोना का पति मथुरा विवाहित होते हुए भी घर में सुन्दर स्त्री होने बावजूद भी सिलिया का चक्कर लगाता रहता है ! इस प्रकार हम देखते है की स्वतन्त्रता पूर्व भारत में नारियो की स्थिति अची नहीं थी उसको घर चारदीवारी तक सीमित रखा जाता था !लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखे तो आज की नारी जाग्रत हो चली है ! वह पुरुषो के अत्याचारों के प्रति मौन या चुपचाप होकर सहन करने के बजाय विद्रोह करने लगी है ! जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कामायनी रचना के लज्जा सर्ग में नारी को विश्वास तथा श्रद्धा की मूर्ति बताया है !-

नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो ,
विश्वास नग –पग तल में !
पीयूष स्रोत सी बहा करो ,
जीवन के सुन्दर समतल में "

गोदान उपन्यास में स्वच्छंद प्रेम की परिणति को उजागर किया गया है ! गोदान में दो प्रकार के स्वच्छंद प्रेम को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

दिखाया गया है ! स्वच्छंद प्रेम के अंतर्गत झुनिया विधवा है दूसरी जाति की है , पर गोबर प्रथम द्रष्टि में ही उसे प्रेम करने लगता है ! गोबर गाँव वालो की पंचाट और माता-पिता डरता है उसे आशंका है कि उसे विवाह को कोई स्वीकार नहीं करेगा फिर भी साहसपूर्वक झुनिया को घर ले आता है ! और गोबर की माता धनिया की उदारता के कारण दोनों का विवाह हो जाता है ! लेकिन गाँव के लोगो को सहन नहीं होता है और पंचायत करके उस विवाह को नकार दिया जाता है ! गाँव में स्वच्छंद प्रेम का दूसरा प्रसंग माता दिन व सिलिया का है माता दिन जाति ब्रामण है ! सिलिया चमारिन है ! दोनों के मध्य प्रेम की घनिष्टता बढ़ जाती है योंन सम्बन्ध स्थापित हो जाता है किन्तु दोनों जाति भय बराबर रहता है और अंत में माता दिन सिलिया से शादी करने के लिए तैयार नहीं होता है ! इस प्रकार वर्तमान समाज में स्वच्छंद विवाह प्रेम की समस्या देखी जाती है ! आज भी अधिकांश विवाह माता –पिता के द्वारा तय किये जाते है ! स्वतंत्र प्रेम को अच्छा नहीं माना जाता है ! परन्तु युवक –युवती के बीच परस्पर आकर्षण सहज स्वभाविक है दोनों चाहते है की उनका प्रथम प्रेम आकर्षण विवाह में परिणित हो ! अत: गोदान उपन्यास ओपनिवेशिक युग , समकालीन नवउपनिवेशवाद में किसान के शोषण की गाथा ही नहीं बल्कि भूमंडलीकरण की चुनोतिया और विमर्शो से सामना करने का वैचारिक मार्ग प्रशस्त करता है !

संदर्भ –

1.गोदान उपन्यास (प्रेमचंद) पृ.सं 47
2. सलाम ओमप्रकाश वाल्मीकि
3. गोदान (प्रेमचंद) पृ.सं 26
4. कामयानी (लज्जा सर्ग) जयशंकर प्रसाद
5. गोदान (प्रेमचंद) पृ.सं 304
6. गोदान (प्रेमचंद) पृ.सं 94
7.सवा सेर गेहू कहानी (प्रेमचंद)
8. गोदान (प्रेमचंद) पृ.सं 155